



सुन्नी कुइज़



सरकारे

गौसे आजम

رَضِيَ
اَللّٰهُ
عَنْهُ

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

गाज़ी किताब घर

गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786/92

सुन्नी कुइज
सरकारे गौसे आजम

रज़ियल्लाहु तआला अनहु

मौलाना सिराजुल कादिरी बहराइची

-:नाशिर:-

गाजी किताब घर

गंगवल बाज़ार ज़िला बहराइच शरीफ़, यू.पी. (इंडिया)

जुमलह हुकूक ब-हक्के नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : सुन्नी कुइज़ सरकारे गौसे आजम
 लेखक : मौलाना सिराजुल-कादिरि बहराइची
 सने इशाअत : १४३७ हि./ २०१५ ई.

Publisher : Ghazi Kitab ghar,

Gangwal Bazar, Bahraich, U.P.

Mobile : 9870742302

मिलने के पते:-

- ☆ मकतबा तय्यबा, इसमाईल हबीब मस्जिद, मुम्बई
- ☆ न्यू सिलवर बुक एजंसी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ नाज़ बुक डीपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ इकरा बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ बुक सिटी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ उसमानियह कुतुबखाना, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
- ☆ कुतुबखाना अमजदिया, देहली
- ☆ मकतबा इमामे आजम, देहली
- ☆ ख्वाजा बुक डीपो, देहली
- ☆ शरीफी किताब घर, चेम्बूर
- ☆ दीनी किताब घर, दरगाह शरीफ, बहराइच
- ☆ गाज़ी बुक डीपो, दरगाह रोड, बहराइच शरीफ, यू. पी.
- ☆ ताजुशशरीअह किताब घर, औरंगाबाद
- ☆ मनसूर अली बुक सेलर, दरगाह शरीफ, बहराइच
- ☆ जामिया वज़ीरुल उलूम गंगवल बाज़ार, ज़िला बहराइच शरीफ, यू. पी.
- ☆ मकतबा अल-हबीबिया, बग्घी रोड, गोन्डा
- ☆ हाफिजे मिल्लत किताब घर, बलरामपुर
- ☆ शकूर सालार बुकसेलर, बलरामपुर
- ☆ मकबतुल-मुस्तफा, बरेली शरीफ

सरकार गौसे आजम रजियल्लाह अनह

- सवाल: हज़रत गौसुल आजम दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे ग्रामी का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: हज़रत सय्यदुना मूसा अबू सालेह जंगी दोस्त रहमतुल्लाह अलैह। (बहुजतुल असरार, सफह २६२, हयाते तय्यबा सफह ७)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के नाना का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रहमतुल्लाह अलैह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की वालेदह माजेदह का इस्मे ग्रामी क्या था?
- जवाब: हज़रत फातेमा सानी उम्मुल खैर रहमतुल्लाह तआला अलैह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की हयाते पाक में बग़दाद के खलीफ़ा कौन लोग हुये?
- जवाब: अल-कादिर बिल्लाह अबुल आस, अल-काइम बिअमरिल्लाह अबू जअफ़र अब्बासी।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का अस्ल नाम बताइये?
- जवाब: सय्यदुना शैख़ अब्दुल कादिर मुहय्युद्दीन जीलानी रहमतुल्लाह अलैह। (बहुजतुल असरार, सफह २६२, हयाते तय्यबा सफह ७)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के वालिद माजिद का अस्ल नाम क्या था?
- जवाब: हज़रत मूसा रहमतुल्लाह अलैह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे ग्रामी की कुन्नियत क्या थी?
- जवाब: अबू सालेह। (ऐज़न)
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की विलादत कब हुई?
- जवाब: यकुम रमज़ानुल मुबारक बरोज़ जुमअ ४७० हिजरी को। (ऐज़न)
- सवाल: उस अज़ीम हस्ती का इस्मे ग्रामी बताइये जिन्होंने ने बिस्मिल्लाह ख़्वानी के मौका पर उस्ताद को मुकम्मल १७ पारे सुना दिये?
- जवाब: शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह का रौज़ा कहाँ वाके है?

- जवाब: बग़दाद शरीफ (इराक) में।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह किस लक़ब से मशहूर हैं?
- जवाब: गौसुल आजम, पीराने पीर, मुहय्युद्दीन, महबूब सुबहानी, बड़े पीर दस्तगीर रोशन ज़मीर वगैरह से। (ऐज़न)
- सवाल: फुतूहुल कुलूब, गुनिय्यतुत्तालिबीन किस की तसनीफ़ है?
- जवाब: हुज़ूर गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की फ़िक़ह में ज़्यादा तर्जुमानी किस इमाम की जानिब थी?
- जवाब: हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़, आप मसलके हंबली के मुकल्लिद थे।
- सवाल: ४० साल तक मुतवातिर इशा के वज़ू से फ़ज़र की नमाज़ किस ने अदा की?
- जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने।
- सवाल: सरकार गौसे आजम रहमतुल्लाह अलैह के पीर व मुर्शिद का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: आरिफ़े बिल्लाह शैख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की औलाद की तअदाद बताइये?
- जवाब: बअज़ ने ४६ बताया है २७ साहेबज़ादे और २२ साहेबज़ादियाँ और बअज़ ने ६ बताया है और एक साहेबज़ादी।
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के बड़े साहेबज़ादे का इस्मे ग्रामी बताइये?
- जवाब: सय्यदुना शैख़ अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैह।
- सवाल: मेरा क़दम तमाम औलिया की गर्दनों पर है, यह कौल किस बुजुर्ग हस्ती का है?
- जवाब: सय्यदुना सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का।
जिस की मिंबर बनी गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम
- सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने बसरह की बारह (१२) बरस की डूबी हुई बारात दरया से निकाली थी, बताइये दूल्हा का नाम क्या था?
- जवाब: सय्यद कबीरुद्दीन दरयाई दूल्हा और अब शाह दूल्हा कहा जाता है।

आप की कब्र मगरिबी पाकिस्तान में है उम्र तकरीबन ६ सौ बरस हुई
गौस पाक के खलीफह थे।

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की विलादत कहाँ हुई?

जवाब: तबरिस्तान के शहर जीलान के कसबा नीफ में।

सवाल: वह कौन से बुजुर्ग हैं जिन के हुक्म से कुमरी ने बोलना और कबूतरी
ने अंडे देना शुरू कर दिया था?

जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह।

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तारीखे विसाल बताइये?

जवाब: १७ रबीउल आखिर। जबकि मशहूर और जमहूर के मुताबिक ११
रबीउल आखिर ५६१ हिजरी है।

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के कुत्ते ने किस बुजुर्ग के शेर
को फाड़ डाला था?

जवाब: हज़रत सय्यदुना शैख अहमद जाम रहमतुल्लाह अलैह के।
क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा
शेर को ख़ातरे में लाता नमहीं कुत्ता तेरा

सवाल: एक वक़्त में ७० मुरीदों के यहाँ इफ़तार में मौजूद रहना किस बुजुर्ग
हस्ती की मशहूर करामत है?

जवाब: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की।

सवाल: क्या गौस का हर ज़माना में मौजूद होना ज़रूरी है?

जवाब: जी हाँ? बग़ैर गौस के आसमान व ज़मीन कायम नहीं रह सकते।

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अपना ख़िरका शरीफ़ किस
को अता फ़रमाया था?

जवाब: हज़रत मुजद्दिदे अलिफ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह को।

सवाल: लक़ब जंगी दोस्त से कौन मुराद है?

जवाब: सरकार गौसे पाक के वालिद सय्यदुना अबू सॉलेह रहमतुल्लाह अलैह।

सवाल: सरकार गौसुल आजम दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह ने पादरी के कहने
पर मुर्दह जिन्दह फ़रमाया था, बताइये उस का असर क्या हुवा था?

जवाब: पादरी के साथ सारी कुरदिस्तानी कौम जो कई लाख की तअदाद में
थी मुसलमान हो गई थी।

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने कुरदिस्तानी पादरी के कहने
पर जिस मुर्दह को जिन्दह फ़रमाया था उस ने अपने बारे में आप से

क्या बताया?

जवाब: मैं हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम के वक़्त का हूँ और उन्हीं के मज़हब पर मुझे मौत आई।

सवाल: हज़रत गौसे आजम के भाई के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप के एक हकीकी भाई थे। जिन का इस्मे ग्रामी अबू अहमद अब्दुल्लाह था, यह आप से उम्र में छोटे थे। और वालेदह मुहतरमा की ख़िदमते रहमत ही में रहे और जीलान के उलमा से इल्म हासिल किया और जवानी के अय्याम में ही अपने वतन जीलान में विसाल फरमाया। (बहुजतुल असरार, सफ़ह २६२, हयाते तय्यबा, सफ़ह ११)

सवाल: सरकार गौसे पाक के वालेदैन के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वालिदे ग्रामी हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त रज़ियल्लाहु तआला अनहु वलीए कामिल बुजुर्ग थे। एक दिन रमज़ान शरीफ़ के महीना में आप कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में दरयाए दजला पार करना पड़ा। उस में से एक सेब बहता हुआ जब आप के करीब आया तो आप ने उस सेब को उठा लिया और उसी से रोज़ह इफ़तार किया। खाने के बाद ख़याल आया खुदा जाने यह सेब किस का था और कैसे नदी में बह गया और हम ने मालिक की इजाज़त के बग़ैर कैसे खा लिया। बग़ैर इजाज़त के खा लेना आप को तक़्वा के ख़िलाफ़ महसूस हुआ और ख़याल आया कि कहीं ऐसा न हो कि क़यामत के दिन यह सेब अज़ाब का सबब बन जाये और हम खुदा की बारगाह में गिरिफ़्तार हो जाएँ। यह सोच कर आप वहाँ से उठे और अपना कुसूर मआफ़ कराने के लिये सेब की मालिक की तलाश में दरया के किनारे किनारे चल दिये। काफी देर तक चलने के बाद एक अज़ीमुश्शान बाग़ नज़र आया जिस की कुछ शाख़ें फलों से लदी हुई पानी की सतेह पर झुकी हुई थीं और हवा के झोंकों से पके हुये फल टूट टूट कर पानी में गिर रहे थे, आप को यकीन हो गया कि जो फल मैं ने खाया है वह उसी बाग़ का था।

फिर आप ने उस बाग़ के मालिक की जुसतुजू की तो मालूम हुआ कि उस बाग़ के एक खुदा रसीदह बुजुर्ग हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई हैं, आप उन की ख़िदमते बाबरक़त में हाज़िर हुये। हज़रत सय्यद

अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने अल्लाह तआला की दी हुई ताक़ते ख़हानी क़श्फ़ से जान लिया कि यह जवान बच्चा जवाने सालेह है। फ़रमाया ऐ जवाने सालेह इस ग़लती को मआफ़ जब क़स्ग़ा कि तुझे दस साल तक मेरे बाग़ की देख भाल करना होगी। हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु हुक्म पाते ही बाग़ की ख़िदमत में मशगूल हो गये। जब दस साल का तवील अरसा गुज़र गया तो एक दिन हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु को बुला कर फ़रमाया कि अभी एक शर्त और बाकी है उसे भी अंजाम देना होग फिर मआफी होगी। वह शर्त यह है कि मेरी एक लड़की है जिस में पाँच ऐब हैं। पहला ऐब वह अंधी है। दूसरा ऐब वह बहरी है। तीसरा ऐब वह गूँगी है। चौथा ऐब वह लुंजी है। पाँचवाँ ऐब वह लंगड़ी है। उस से आप को निकाह करना होगा। हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु यह सुन कर सोच में पड़ गये। एक तरफ़ सेब की मआफी का सवाल था और दूसरी तरफ़ ऐसी औरत से निकाह करना जो अपाहिज है। सारी ज़िन्दगी का मसअला था। आख़िर ऐसी औरत के साथ सारी ज़िन्दगी कैसे कटेगी। इस तसव्वुर ने अज़ हद परेशान कर दिया, उन के ज़ेहन में ख़यालात हुजूम बन कर आये आख़िर फैसला किया कि ज़िन्दगी फ़ानी है, जवानी भी चन्द दिन की मेहमान है। हज़रत शैख़ अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कहा मुझे मंज़ूर है, मैं आप की अपाहिज बेटी के साथ निकाह करने को तैयार हूँ।

यह सुन कर हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने सेब की ग़लती को मआफ़ कर दिया। निकाह हो गया। जब हज़रत अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपनी बीवी के पास गये तो देखा उस के तमाम आज़ा दुरुस्त हैं। एक निहायत ख़ूबसूरत तनदुरुस्त लड़की बैठी है, उस हुस्नो जमाल के पैकर को देख कर ख़याल किया शायद कोई और लड़की है, जल्दी से बाहर निकल आये। हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु से मुलाकात हुई और कहा यह तो कोई और औरत है इस में तो कोई ऐब ही नहीं और अपने हुस्न व जमाल में बेमिसाल है। हज़रत

अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया ऐ जवान सालेह यही तेरी बीवी है। मैं ने अपनी बच्ची के जो औसाफ बयान किये थे उस का मतलब यह था। वह अंधी है यानी उस ने कभी नामहरम को नहीं देखा। वह गूंगी है यानी कभी उस ने बद-कलामी नहीं की। वह लेंगड़ी है यानी कभी उस ने अपने कदम को बुरे रास्ते पर नहीं रखा। यह हज़रत अब्दुल्लाह सुमई रज़ियल्लाहु तआला अनहु की साहेबज़ादी थीं जिन का निकाह हज़रत शेख अबू सालेह मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु से हुवा जो वलीए कामिल की बेटी थीं और वलीए कामिल की बीवी बनीं और फिर उन्हीं पाक तीनत खातून हज़रत उम्मुल खैर फातेमा सानी रज़ियल्लाहु तआला अनहा के शिकमे पाक से सरकार गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु पैदा हुये और उस मुक़द्दस माँ को सरदारै औलिया, बड़े पीर, हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु को दूध पिलाने और गोद में लेने का शर्फ हासिल हुवा। (बहुजतुल असरार, सफ़ह २६२, हयाते तय्यबा, सफ़ह ७) ब-हवाला अनवारुल बयान।

सवाल: गौसे आजम के मुरीदों को कौन सी बशारत है?

जवाब: हज़रत सुहैल इब्ने अब्दुल्लाह तुसतरी रज़ियल्लाहु तआला अनहु से मनकूल है कि एक दिन सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु बग़दाद वालों की नज़र से ग़ायब हो गये। लोगों ने तलाश किया दरयाए दजला के किनारे पाया तो क्या देखा कि मछलियाँ ब-कसरत आप की ख़िदमत में आती हैं और दस्ते मुबारक का बोसा देती हैं। उसी असना में ज़ोहर का वक़्त हो गया, एक मुसल्ला हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त की तरह हवा में मुअल्लक हो कर बिछ गया और उस मुसल्ला के ऊपर दो सतरें लिखी थीं पहली सतर में "अला इन्ना औलियाअल्लाहि ला ख़ौफुन अलैहिम वला हुम यहज़नून"

(पारह ११, रुकू १२)

लिखा हुवा था और बहुत से नूरानी शक्ल के लोग आये और मुसल्ला पर सफ़ में खड़े हो गये और सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु मुसल्ला पर आगे तशरीफ़ ले गये और नमाज़ पढ़ाई उस वक़्त अजीब व ग़रीब समाँ था जब हुज़ूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु तसबीह पढ़ते तो सातों आसमान के फरिश्ते भी आप

के साथ तसबीह पढ़ते। गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दोनों हाथों को दुआ के लिये बारगाहे रब्बुल आलमीन में उठा कर अर्ज किया, ऐ अल्लाह तआला! मैं तेरी बारगाहे बेनियाज़ी में तेरे प्यारे महबूब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वसीले से तालिब हूँ और दुआ करता हूँ कि तू मेरे मुरीदों को और मुरीदों के मुरीदों को सुबहे कयामत तक मौत न दे मगर ईमान पर। यानी मेरे मुरीदों का ईमान पर खातेमा नसीब फरमा। हज़रत सुहैल रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि हम ने आप की मुबारक दुआ पर फरिश्तों के एक बहुत बड़े गिरोह को आमीन कहते हुये सुना और जब सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु दुआ पूरी कर चुके तो हम ने ग़ैब से एक निदा सुनी कि ऐ अब्दुल कादिर जीलानी! मेरे महबूब सुबहानी, तुम को बशारत हो, खुशख़बरी हो कि हम ने आप की दुआ कुबूल फरमा ली। (तलख़ीस बहुजतुल असरार, सफ़ह २६१)

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निसबत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश् तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
(ब-हवाला अनवारुल बयान)

सवाल: नेक मेरे लिये और मैं गुनहगारों के लिये हूँ किस का फ़रमान है?

जवाब: सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु का।

शैख बुका बिन बतूर रहमतुल्लाह तआला अलैह फरमाते हैं कि एक शख्स ने हुज़ूर सरकारे गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर आप के मुरीदों में परहेज़गार भी होंगे और गुनहगार भी। तो सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने इरशाद फ़रमाया कि परहेज़गार नेको कार मेरे लिये हैं और मैं गुनहगारों के लिये हूँ। (तलख़ीस बहुजतुल असरार, सफ़ह २६४)
ब-हवाला अनवारुल बयान

सवाल: सरकार गौसे पाक की बचपन के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: तमाम बुजुर्गाने दीन का इत्तिफ़ाक़ है कि आप मादरज़ाद बली हैं।

चुनाँचे विलादत के बाद ही आप की यह करामत ज़ाहिर हुई कि आप रमज़ान में तुलूए फज़ से गुरूबे आफ़ताब तक कभी दूध नहीं पीते थे यानी रमज़ान शरीफ़ के पूरे महीने आप रोज़ह रखते थे और जब इफ़तार का वक़्त होता मगरिब की अज़ान होती तो आप दूध पीने लगते, यह करामत इस क़द्र मशहूर हुई कि जीलान के हर तरफ़ यह शोहरा और चर्चा था कि सादात के घराने में एक ऐसा बच्चा पैदा हुवा है जो रमज़ान मुबारक में दिन भर दूध नहीं पीता। (कलाइदुल जवाहिर, सफ़ह ३)

सवाल: सरकार गौसे पाक एक ग़ैबी आवाज़ सुना करते थे उस के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हमारे बड़े पीर, हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु बचपन ही से लहू व लइब से मुतनफ़िर और दूर रहे। आप ने खुद अपने बचपन के हालात बयान फ़रमाते हुये इरशाद फ़रमाया कि जब कभी मैं बच्चों के साथ खेलने का इरादह करता तो एक ग़ैबी आवाज़ मैं सुनता था कि कोई कहने वाला मुझ से कहता है कि ऐ बरकत वाले बच्चे! मेरी तरफ़ आ जा। (बहुजतुल असरार, सफ़ह ५०)

सवाल: सरकार गौसे पाक अपनी विलादत का इल्म होने के तअल्लुक से क्या फ़रमाते है।?

जवाब: आप ने फ़रमाया कि दस बरस की उम्र में जब मैं मक़तब में पढ़ने के लिये जाता था तो रास्ते में मेरे पीछे पीछे फ़रिश्ते चलते नज़र आते थे फिर जब मैं मक़तब में पहुँचता तो उन को यह कहते हुये सुनता कि इफ़सहू लिवलियिल्लाहि यानी अल्लाह के वली के लिये बैठने की जगह दो और यह आवाज़ तमाम मक़तब वाले सुनते थे। (बहुजतुल असरार, सफ़ह २५५, खुलासतुल मफ़ाख़िर)

सवाल: सरकार गौसे आजम से एक बैल ने कलाम किया इस तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप फ़रमाते हैं कि मैं एक शहर के बाहर सैर व तफ़रीह के लिये जा रहा था रास्ते में एक बैल मिला उस ने मेरी तरफ़ मुड़ कर देखा और ब-ज़बाने फ़सीह कलाम किया। ऐ अब्दुल कादिर! न तो तुम इस घूमने फिरने के लिये पैदा किये गये और न इस बात का तुम्हें हुक्म दिया गया। आप फ़रमाते हैं कि एक बेज़बान जानवर बैल से यह नसीहत

गुन कर मेरे कल्ब में मोहब्बते इलाही का जज़्बा मोजेज़न हो गया और मैं घर वापस आ गया। (बहजतुल असरार, सफ़ह २५५, खुलासतुल मफाख़िर)

सवाल: सरकार गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के बग़दाद के सफ़र का वाकिअह बयान कीजिये?

जवाब: आप ने अठ्ठारह साल की उम्र में वालिदह माजिदह से इजाज़त लेकर इल्मे दीन के हुसूल के लिये जीलान से एक काफ़िला के साथ बग़दाद शरीफ़ का सफ़र फरमाया जो तकरीबन चार सौ मील का सफ़र है। जब काफ़िला हमदान से आगे बढ़ा तो डाकुओं ने हमला कर के सारा माल व असबाब लूट लिया। हमारे बड़े पीर हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक तरफ़ खड़े हैं और सारा माजरा देख रहे हैं, एक डाकू आप के पास आया और दरयाफ़्त किया कि ऐ साहेबज़ादे! बताओ तुम्हारे पास क्या है? आप ने फरमाया मेरे पास ४० दीनार हैं। डाकू आप की बात को मज़ाक समझ कर चला गया। फिर दूसरा डाकू आया उस ने भी वही सवाल किया और आप ने उसे भी वही जवाब दिया। उस ने भी आप की बात को मज़ाक समझा और चला गया। जब यह दोनों डाकू सरदार से मिले और सारा वाकिअह बयान किया तो सरदार ने कहा कि उस लड़के को हमारे पास लाओ। हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु डाकुओं के सरदार के पास लाये गये, डाकुओं के सरदार ने दरयाफ़्त किया, साहेबज़ादे! सच बताओ कि तुम्हारे पास क्या है? आप ने फरमाया कि मेरे पास ४० दीनार हैं। सरदार ने पूछा: कहाँ हैं? आप ने फरमाया मेरी गुदड़ी के बग़ल में सिले हुये हैं। सरदार ने हुक्म दिया कि गुदड़ी चाक की जाये। आप की गुदड़ी मुबारक चाक की गई तो उस में से ४० दीनार निकले। डाकू और उन का सरदार आप की सदाक़्त को देख कर हैरान रह गये। सरदार बोला कि लड़के तुम अच्छी तरह जानते हो कि हम लोग रहज़न हैं, तुम्हारे पास यह दीनार तो बहुत अच्छी तरह पोशीदह और महफूज़ थे लेकिन तुम ने क्यों बता दिया और उसे ज़ाहिर कर दिया। आप ने मुसकुरा कर फरमाया, क्या मैं झूठ बोलता, तुम ने पूछा और मैं ने सच सच बता दिया। क्यों कि मेरी वालिदह माजिदह ने चलते वक़्त मुझ से यह अहेद लिया था कि बेटा कैसा भी

वक्त आये, कैसी भी हालत आये मगर कभी झूठ न बोलना, हर हालत में सच बोलना, अब क्या मैं आप लोगों से डर कर और ४० दीनार के लिये अपनी माँ से किये हुये अहेद व पैमान को तोड़ दूँ। अपनी माँ की नसीहत को भूल जाऊँ और अपनी प्यारी माँ को नाराज़ करूँ। ऐ सरदार सुन लो दीनार तो दे सकता हूँ मगर माँ की बात नहीं। खुद तो लुट सकता हूँ मगर माँ की वसियत व नसीहत को नहीं लुटा सकता, माँ का हुक्म था हर हाल में सच बोलना इस लिये मैं ने सच मुच सब कुछ बता दिया।

गौसे आजम इमामुत्तका वन्नुका

जलवए शाने कुदरत पे लाखों सलाम

हमारे बड़े पीर हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की इस प्यारी और सच्ची बात का सरदार पर ऐसा असर हुवा कि आँखों से आँसू जारी हो गये और बोला आह! तुम अपनी माँ का अहेद व पैमान नहीं तोड़ सकते और हम हरदम खुदाए तआला का अहेद तोड़ रहे हैं। यह कहते हुये डाकुओं का सरदार आप के कदमे मुबारक पर गिर गया, सिदक दिल से तौबा कर ली, डाकुओं ने अपने सरदार को तौबा करते हुये देखा तो कहने लगे कि जब तुम रहज़नी में हमारे सरदार थे तो अब तौबा में भी हमारे सरदार हो। तमाम डाकुओं ने भी तौबा कर के काफिले वालों को लूटा हुवा माल वापस कर दिया और अब इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गये और अपने दौर के बेहतरीन सॉलेहीन बन गये। हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लहु तआला अनहु फरमाया करते थे। *हुम अव्वलु मन ताबा अला यदी।* यानी सब से पहले मेरे हाथ पर तौबा करने वाले वही लोग थे। (बहजतुल असरार, सफ़ह २५६, कलाइदुल जवाहर, सफ़ह ६)

सवाल: सरकार गौसे पाक के मुजाहिदह के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी से फरागत के बाद रियाज़त व मुजाहिदह में मशगूल हो गये और बड़े बड़े मुजाहिदे किये, सालहा साल मदाइन और ऐवाने किसरा के खंडरात में चिल्ले और मुराकबे करते रहे, कई महीनों तक सिर्फ़ गिरी पड़ी मवाह चीज़ें खा लेते और पानी नहीं पीते, कभी तो सिर्फ़ पानी

पी कर महीनों तक कुछ नहीं खाते, वीरानों और जंगलों में भूके प्यासे गश्त करते रहते और कभी कभी ४०-४० दिनों तक बे आबो दाना मुसलसल इबादत व रियाज़त में मशगूल रह कर ख़्वाहिशाते नफसानिया से जिहाद फरमाते थे। (बहजतुल असरार, सफ़ह २४६, क़लाइदुल जवाहिर, सफ़ह २५६)

सवाल: एक मर्तबा शैतान ने सरकार गौस पाक को फरेब देना चाहा इस तअल्लुक से बताइये?

जवाब: आप के फरज़न्द शैख़ मूसा रज़ियल्लाहु तआला अनहु का बयान है कि आप ने अपनी सयाहत के दौरान एक मर्तबा किसी ऐसे जंगल में चले गये जहाँ पानी का नामो निशान तक न था, कई दिन आप पर प्यास का सख़्त ग़लबा रहा अचानक एक दिन आप के सरे मुबारक पर बादल का टुकड़ा आ गया और बारिश होने लगी जिस से आप ख़ूब सैराब हो गये फिर उस बादल से एक रौशनी ज़ाहिर हुई जो हद्दे नज़र तक फैल गई और उस रौशनी में एक सूरत ज़ाहिर हुई उस ने पुकार कर कहा **ऐ अब्दुल कादिर!** मैं तुम्हारा रब हूँ मैं ने तुम पर तमाम हराम चीज़ों को हलाल कर दिया। यह आवाज़ सुन कर मेरे आका हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने **अऊज़ु बिल्लाहि मिनशशैतानिरर्जीम** पढ़ा और फरमाया **ऐ मरदूद** तू दूर हो जा वह रौशनी ग़ायब हो गई और वह सूरत धुएँ की तरह फैल गई, फिर उस से आवाज़ आई **ऐ अब्दुल कादिर!** आज तुम अपने इल्म की बदौलत मेरे फरेब से बच गये वरना इस के पहले इसी मैदान में ७० औलियाए तरीक़त को मैं गुमराह कर के उन की विलायत को ग़ारत व बरबाद कर चुका हूँ। हुज़ूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया **ऐ शैतान!** मेरा इल्म भला क्या बचा सकता है, जब तेरा इल्म तुझ को नहीं बचा सका। **ऐ शैतान** मरदूद ख़ूब ग़ौर से सुन ले, मेरे इल्म ने नहीं बल्कि मेरे रब के फज़ल व करम ने मुझे तेरे शर से बचा लिया। (क़लाइदुल जवाहिर, सफ़ह २०)

सवाल: सरकार गौसे पाक के क़दमे मुबारका के बारे में आला हज़रत बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु क्या फरमाते हैं?

जवाब: वाह क्या मर्तबा ऐ गौस है बाला तेरा
ऊँचे-ऊँचे के सरो से कदम आला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

सवाल: कदमी हाज़िही अला रकबति कुल्लि वलिय्युल्लाह

यानी मेरा कदम हर वली के गर्दन पर है, सरकार गौसे पाक के
ज़बाने मुबारक से यह एलान सुन कर कितने लोगों ने गर्दन झुका ली?

जवाब: उस वक्त ३१३ औलियाए केराम आप की मजलिस में हाज़िर थे सब
के सब ने अपना अपना सर झुका कर अर्ज़ किया कि ऐ सरकार
गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु आप का कदमे मुबारक हमारी
गर्दनों पर ही नहीं बल्कि आप का कदम शरीफ़ तो हमारे सरो और
हमारी आँखों पर है। और उन तमाम बुजुर्गों ने देखा कि तमाम रूप
ज़मीन के औलियाए केराम आप के हुक्म पर अपनी अपनी गर्दनें
झुकाये खड़े हैं और सरकार गौस पाक के कल्बे मुबारक पर अल्लाह
तआला के अनवार व तजल्लियात की बारिश हो रही थी और मदीने
वाले आका रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अता
किया हुवा ख़िलअते करामत औलियाए केराम के इज़दहाम में फ़रिश्ते
आप को पहना रहे हैं। (बहतजुल असरार, सफ़ह १७)

सवाल: हज़रत शैख़ मकारिम अलैहिर्रहमह क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: औलियाए केराम ने देखा कि कुतबियत का झंडा आप के सामने गाड़ा
गया और गौसियत का ताज आप के सरे मुबारक पर रखा गया जिस
को सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने खुद इरशाद
फ़रमाया।

कसानी ख़िलअतन बितराज़ि अज़मी

व तव्वजनी बितीजानिल कमाली

यानी मेरे रब ने मुझे उलुल अज़मी और बुलंद हिम्मती कि ख़िलअत
पहनाई और फ़ज़्लो कमाल का ताज मेरे सर पर रख दिया।

तुबूली फ़िस्समाई वल अर्जु दुक्कतु

व शाऊसुस्सआदति क़द बदाली

यानी ज़मीनो आसमान में मेरी शान के नक्क़ारे बजते हैं और नेक
बख़्ती के नकीब मेरे ख़बर हाज़िर होते हैं।

अनल जीलियु मुहियुदीनु इस्मी

व अगलामि अला रासिल जिबाली

यानी मैं जीलान का रहने वाला हूँ और मेरा नाम मुहियुदीन है और मेरे इकबाल के झंडे पहाड़ों की चोटियों पर लहरा रहे हैं।

(कसीदह गौसिया शरीफ)

सवाल: आरिफों के सरदार हज़रत मोहम्मद काकीस की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत मोहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अनहु जो इराक के सय्यदुल मशाइख और अमीरे औलिया हैं, जिन के मुरीदों में १७ बादशाह भी थे, और आप के नीचे बाअदब चला करते थे। हज़रत शैख अज़ाज़ रहतुल्लाह अलैह बयान करते हैं कि मैं ख्वाब में हुज़ूर सरकारे मदीनह मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदारे पुर बहार से मुशरफ हुवा तो मैं ने अपने प्यारे नबी, मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे रहमत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप हज़रत मोहम्मद काकीस के बारे में क्या इरशाद फरमाते हैं तो हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस शख्स के बारे में मुझ से क्या पूछते हो, वह तो उन लोगों में से है जिन के सबब से मैं क़यामत के दिन फख्र करूँगा कि ऐसे ऐसे साहिबे कमाल मेरी उम्मत में हैं। हज़रत मोहम्मद काकीस रज़ियल्लाहु तआला अनहु १२ रजबुल मुरज्जब ४१७ हिजरी में पैदा हुये और २० रबीउल अव्वल ५०१ हिजरी को बग़दाद शरीफ के करीबी शहर क़लमीनिया में वफ़ात पाई।

(क़लाइदुल जवाहिर, सफ़ह १८)

सवाल: शैख अली बिन हेती की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: शैख अली बिन हेती रज़ियल्लाहु तआला अनहु बग़दाद के उन चार बुजुर्गों में से हैं जो मुर्दह को ज़िन्दह फरमा देते थे, एक दिन सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ की मजलिस में हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अनहु हाज़िर थे नागहाँ उन पर नींद का ग़लबा हो गया, तो सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपने वअज़ के मिम्बर से उतर कर उन के पास

बा-अदब खड़े हो गये जब हज़रत अली बिन हीती रज़ियल्लाहु तआला अनहु बेदार हुये तो अर्ज किया कि ऐ सारकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु मुझ को अभी ख़्वाब में मुहतरम व मुकर्रम रसूले आजम प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार हुवा है तो हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया इसी लिये तो मैं मिनबर से उतर कर अदब व एहताराम से आप के पास खड़ा हो गया था कि आप को ख़्वाब में दीदार नसीब हुवा और मैं सर की आँखों से प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदारे पुरबहार से सरफ़राज़ हुवा।

(बहजतुल असरार)

सवाल: हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अनहु की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत इब्ने मुहय्युद्दीन अरबली रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने मुकाशिफ़ा जुनेदिया के हवाले से बयान किया है कि सय्यदुत्ताइफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक रोज़ मिनबर पर जलवह अफ़रोज़ हो कर खुतबा दे रहे थे कि आप के क़ल्बे मुबारक पर तजल्लियाते रब्बानी का वरूद हुवा और आप बहरे मुकाशिफ़ा में मुसतगरक हो गये और फ़रमाया। मेरी गर्दन पर उन का क़दम बग़ैर किसी इन्कार के है। और मिनबर की एक सीढ़ी उतर आये, नमाज़े जुमअ से फ़ारिग़ होने के बाद लोगों ने उन कलेमात के मुतअल्लिक आप से दरयाफ़्त किया, आप ने फ़रमाया कि हालते कश्फ़ में मुझे मालूम हुवा कि पाँचवीं सदी हिजरी के वस्त में हुज़ूर सय्यदे आलम, रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की औलादे पाक में से एक बुजुर्ग़ कुतुबे आलम होगा जिस का लक़ब मुहय्युद्दीन और नाम अब्दुल क़ादिर होगा और वह अल्लाह तआला के हुक्म से कहेगा "मेरा क़दम हर वली की गर्दन पर है" तो मेरे क़ल्ब में ख़याल आया कि हम उन के ज़माने में नहीं हैं इस लिये उन का क़दम हम अपनी गर्दन पर क्यों लें। इस ख़याल का आना था कि अल्लाह तआला को नाराज़ और क़हरो ग़ज़ब में देखा तो फ़ौरन मैं ने अपनी गर्दन झुका दी और वह कहा जो तुम लोगों ने सुना। (तफ़रीहुल ख़्वातिर फ़ी मनाकिबे शैख़ अब्दुल क़ादिर, तरगीबुन्नाज़िर, ब-हवाला हयाते तय्यबा, सफ़ह १५)

सवाल: मेरा हाथ मेरे मुरीदों पर हमेशा है, इस के मुतअल्लिक रोशनी डालिये?

जवाब: हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि रब तबारक व तआला की इज्जत व जलाल की कसम! *यदी अला मुरीदी कस्समाई अलल अर्ज़ि*। यानी मेरा दस्ते हिदायत मेरे तमाम मुरीदों पर ऐसा है जैसे आसमान का साया ज़मीन पर। और ऐ दुनिया वालो सुन लो! मेरा मुरीद अच्छा नहीं मगर मैं तो अच्छा हूँ, मेरा मुरीद ताक़त व कुव्वत वाला नहीं मगर मैं तो ताक़त व कुव्वत वाला हूँ और मैं कयामत तक अपने मुरीदों की दस्तगीरी करता रहूँगा। अल्लाह तआला की इज्जत व जलाल की कसम जब तक मेरे तमाम मुरीद जन्नत में नहीं जाएँगे मैं बारगाहे खुदावंदी में नहीं जाऊँगा। (खुलासा कसीदए गौसिया शरीफ़, खुलासा बहजतुल असरार, सफ़ह २६४)

सवाल: मुस्तफ़ा करीम और मुर्तज़ा की ज़ियारत के तअल्लुक से बताइये?

जवाब: हज़रत शैख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ रज़ियल्लाहु तआला अनहु से रिवायत है कि हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया कि मैं १६ शव्वालुल मुकर्रम ५२१ हिजरी को मंगल के दिन दोपहर के वक़्त नाना जान मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीदार से मुशरफ़ हुवा तो प्यारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बेटे अब्दुल कादिर! तुम वअज़ क्यों नहीं करते? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मैं अजमी हूँ फुसहाए बग़दाद के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बेटा अब्दुल कादिर अपना मुंह खोलो! जब मैं ने अपना मुंह खोला तो हुजूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सात मर्तबा लुआबे दहेन शरीफ़ मेरे मुंह में डाला और फ़रमाया कि तुम हिकमत और बेहतरीन नसीहत के साथ लोगों को खुदाए तआला के रास्ता की तरफ़ दावत दो। फिर उस के बाद दादा जान हज़रत मौला अली करमल्लाहु वजहहू की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुवा तो उन्होंने ने छः मर्तबा अपना लुआबे दहेन मुझे अता फ़रमाया, मैं ने अर्ज़ किया छः ही मर्तबा क्यों? आप ने भी सात मर्तबा क्यों नहीं अपना लुआबे दहेन अता फ़रमाया? तो इरशाद फ़रमाया कि मैं ने

हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अदब के लिये छः ही मर्तबा अपना लुआबे दहेन तुम्हें बख्शा है ताकि जाने आलम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ बराबरी का शुबहा न पैदा हो सके। (कलाइदुल जवाहिर, सफ़ह १३, शैख अब्दुल हक जुबदतुल आसार, सफ़ह ६५, हयाते तय्यबा, सफ़ह ४३)

सवाल: हज़रत गौस पाक के वअज़ में कितने सामईन होते थे?

जवाब: शैख अब्दुल्लाह हयाई रहमतुल्लाह तआला अलैह फ़रमाते हैं लोग घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों और सवारी की गधों पर सवार होकर आते थे और खड़े रहते थे जबकि मजलिस हिसार की तरह गोल हो जाती थी और मजलिस में तक़रीबन ७० हज़ार सामईन हाज़िर रहते थे। (बहजतुल असरार, सफ़ह २७०, खुलासतुल मफ़ाख़िर, कलाइदुल जवाहिर, सफ़ह १३, शैख अब्दुल हक, जुबदतुल आसार, सफ़ह ६५)

सवाल: सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ का असर किस तरह होता था?

जवाब: हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ मुबारक का यह असर था कि सैकड़ों गुनहगार व बदकार आप के दस्ते मुबारक पर तौबा करते और फुस्साक व फुज्जार ताइब होकर परहेज़गार व नेको कार बन जाते और तक़रीर की तासीर से मजलिस पर वज्द की कैफ़ियत तारी होती, कोई माहिए बेआब की तरह तड़पता तो कोई बे इख़्तियार हो कर कपड़े फाड़ता और चीखता चिल्लाता और किसी के दिल पर ऐसी चोट लगती कि शमशीरे मोहब्बत से घायल होकर मौत की नींद सो जाता, जब वअज़ ख़त्म होता तो कितने जनाज़े उठाये जाते। गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वअज़ में मुसलमानों के अलावह दीगर मज़ाहिब के लोग भी हाज़िर होते। आप के वअज़ का यह असर होता कि बहुत से यहूदी, ईसाई और दूसरे कुफ़्फ़ार कलेमह पढ़ कर मुसलमान हो जाते। (बहजतुल असरार, सफ़ह २८१, कलाइदुल जवाहिर, सफ़ह २१२) ब-हवाला अनवारुल बयान।

सवाल: हज़रत गौसे आजम की बारगाह में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एक राहिब के भेजने के मुतअल्लिक बताइये?

जवाब: एक राहिब आया और हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के नूरानी हाथ पर तौबा किया और मुसलमान हो गया। फिर उस

राहिव ने मजमए आम में बयान किया कि मैं यमन का रहने वाला हूँ, मुझे मुसलमान होने का शौक हुआ तो मैं ने यह मुसम्मम इरादह कर लिया कि यमन में जो शख्स सब से ज्यादा परहेज़गार होगा उसी के हाथ पर मुसलमान हूँगा। इसी खयाल में था कि मुझे नौद आ गई ख़्वाब में हज़रत सय्यदुना ईसा अलैहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया ऐ सनाम बग़दाद चले जाओ और शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी के हाथ पर मुसलमान हो जाओ इस लिये कि इस ज़माने में ख़ूए ज़मीन के लोगों में सब से बेहतरीन वही हैं। (बहजतुल असरार)

सवाल: मुर्दह ज़िन्दह हो गया इस वाकिअह पर रौशनी डालिये?

जवाब: सरदारै औलिया हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु एक दिन अपने चन्द मुरीदीन और साथियों के साथ एक मुहल्ले से गुज़रे तो देखा कि एक मुसलमान और एक ईसाई आपस में झगड़ रहे हैं, पीराने पीर आका दस्तगीर ने झगड़े का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो मुसलमान ने अर्ज किया कि यह ईसाई कहता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अफ़ज़ल हैं। हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने ईसाई से फ़रमाया कि तुम किस वजह से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अफ़ज़ल कहते हो। ईसाई कहने लगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को ज़िन्दह कर देते थे। हज़रत गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया मैं नबी नहीं बल्कि रसूले मुअज्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की औलाद और उम्मती हूँ। अगर मैं मुर्दे को ज़िन्दह कर दूँ तो क्या तू हमारे प्यारे नबी सरकारे मदीनह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत व बरतरी को तसलीम करेगा। ईसाई ने कहा ज़ख़र करूँगा। हुज़ूर गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया कि क़ब्रस्तान लेकर चल और कोई बहुत पुरानी क़ब्र जिस को तू जानता हो बता, मैं क़ब्र के मुर्दे को ज़िन्दह करूँगा। वह ईसाई हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु को लेकर क़ब्रस्तान गया और एक पुरानी बोसीदह क़ब्र की तरफ़ इशारह किया। आप ने क़ब्र की तरफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया इस क़ब्र का मुर्दह दुनिया में गाने बजाने का पेशा करता था। अगर तेरी मर्ज़ी हो तो यह मुर्दह गाता हुआ क़ब्र से बाहर आये हैरत से ईसाई ने अर्ज किया यह

तो और अहेम बात है ऐसा ही कीजिये, हज़रत ग़ौस पाक ने क़ब्र को देखा और फ़रमाया "कुम बिइज़निल्लाह" तो क़ब्र शक़ हुई और मुर्दह ज़िन्दह होकर गाता हुवा क़ब्र से बाहर निकल आया। ईसाई ने यह करामत देख कर तौबा की और मुसलमान हो गया। (तफ़रीहुल ख़वातिर)

सवाल: मुर्गी के ज़िन्दह होने का वाकिअह बयान कीजिये?

जवाब: एक औरत अपने लड़के को लेकर हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह लड़का आप से बेहद मोहब्बत व अकीदत रखता है, अपनी गुलामी में कुबूल फ़रमाएँ और शरीअत व तरीक़त की तअलीम से आरास्ता फ़रमा दें। चुनाँचे वह लड़का इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गया। एक दिन वह औरत अपने लड़के को देखने के लिये आई तो देखा कि उस का लड़का जौ की रोटी बग़ैर सालन के खा रहा है और कसरते इबाद व रियाज़त के असर से बहुत दुबला और लागर हो गया है। फिर जब वह औरत बारगाहे ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु में हाज़िर हुई तो देखा कि आप मुर्गी का गोश्त तनाउल फ़रमा चुके हैं और हड्डियाँ बरतन में रखी हुई हैं। औरत ने अर्ज़ किया कि मेरे आका आप ने मेरे बच्चे पर कोई शफ़क़त नहीं फ़रमाई। आप तो मुर्गी खा रहे हैं और मेरे बच्चे को जौ की रोटी सूखी बग़ैर सालन के खिला रहे हैं। यह सुन कर आप ने अपना दस्ते मुबारक उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया *या कूमी बिइज़निल्लाहिल्लज़ी युहइल इज़ामा व हिया रमीम।* यानी ऐ मुर्गी तू उस खुदा के हुक्म से ज़िन्दह हो कर खड़ी हो जा जो गली सड़ी हड्डियों को ज़िन्दह फ़रमाता है।

हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु का हुक्म सुनते ही मुर्गी ज़िन्दह होकर खड़ी हो गई और ब-ज़बाने फ़सीह यह पढ़ा *ला-इलाहा इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अशशैखु अब्दुल कादिरु वलियुल्लाह।* तब आप ने फ़रमाया ऐ बूढ़ी माँ सुन जब तेरा बेटा इस दर्जा तक पहुंच जाएगा तो जो चाहेगा खाएगा।

(बहजतुल असरार, सफ़ह १६३, कलाइदुल जवाहर, सफ़ह ३८, शैख़ अब्दुल हक़, जुबदतुल आसार, सफ़ह ८६)

सवाल: अंधा और मफलूज सेहत पा गया वाकिअह बयान कीजिये?

जवाब: हज़रत शैख अबुल हसन करशी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने बयान किया कि मैं और हज़रत शैख अबुल हसन अली बिन हीती अलैहिर्रहमह वरिज़वान हज़रत शैख मुहय्युद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु की खिदमत में बैठे थे कि हज़रत की खिदमत में ताजिर अबू ग़ालिब बग़दारी हाज़िर हुवा और अर्ज किया कि ऐ मेरे सरकार आप के रहीम व करीम नाना जान रसूलुल्लाह सल्लल्लहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स की दावत की जाये उस को चाहिये कि वह दावत को कुबूल करे और मैं आप को अपने मकान पर दावत की ज़हमत देने के लिये हाज़िर हुवा हूँ। सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया कि अगर मुझे इजाज़त मिली तो आऊँगा। आप ने मुराकेबह किया और फरमाया कि मैं ज़रूर आऊँगा। मुकर्रह वक़्त पर मैं और शैख हीती आप के हमराह ताजिर अबू ग़ालिब बग़दादी के मकान पर पहुंचे वहाँ देखा तो बग़दाद के बहुत से उलमा मशाइख और आयाने हुक्मत मौजूद थे आप के सामने दस्तरख़्वान लगाया गया जिस पर रंगारंग के खाने चुने हुये थे और दो शख्स एक बहुत बड़ा टोकरा उठा कर लाये जिस का मुंह ढका हुवा था यह टोकरा दस्तरख़्वान के एक तरफ़ ला कर रख दिया गया। मेज़बान अबू ग़ालिब ने हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की खिदमत में अर्ज किया कि इजाज़त है खाना शुरू किया जाये। आप ने कुछ नहीं फरमाया अपना सर झुकाये रहे, न खुद खाया न दूसरों को इजाज़त दी। अहले मजलिस पर आप की हैबत इस तरह तारी थी गोया उन के सरो पर परिन्दे बैठे हैं फिर आप ने मुझे और शैख अली बिन हीती को इशारह किया कि उस टोकरे को उठा कर यहाँ लाओ, वह टोकरा लाया गया जो बहुत वज़नी था फिर आप ने मुझे और शैख अली बिन हीती को हुक्म दिया कि इस टोकरे को खोलो जब हम ने टोकरा खोला तो उस में अबू ग़ालिब ताजिर का अंधा और फ़ालिज ज़दह लड़का बैठा हुवा था। आप ने उस को देख कर फरमाया **“कुम बि-इज़निल्लाह”** अल्लाह तआला के हुक्म से तू तंदुरुस्त हो कर खड़ा हो जा आप के फरमाते

ही वह लड़का तंदुरुस्त शख्स की तरह खड़ा हो गया और कोई बीमारी उस में मौजूद नहीं थी और वह दौड़ने लगा। हुजूर गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की यह करामत देख कर मजलिस में शोर बर्पा हो गया और लोग नअरे लगाने लगे और गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु बगैर कुछ खाये पिये उस हुजूम में से उठ कर अपनी खानेकाह शरीफ में आ गये। हज़रत शैख अबू सईद केलवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु अल्लाह तआला के हुक्म से मादरज़ाद अंधों और बर्स वालों को अच्छा करते और मुर्दों को जिलाते हैं।

(बहजतुल असरार, सफह १८४, शैख अब्दुल हक, जुबदतुल आसार, सफह ६०)

सवाल: गौस पाक की दुआ से तकदीर बदल गई, मुखतसर बयान कीजिये?

जवाब: शैख अबुल मसऊद बिन अबी बक्र हरीमी बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया है कि अबुल मुज़फ़्फ़र हसन बिन तमीम ताजिर शैख हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज किया या सय्यदी! मैं तिजारत की गर्ज से सफ़र करना चाहता हूँ। शैख हम्माद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अगर तुम ने इस साल सफ़र किया तो क़त्ल कर दिये जाओग, और तुम्हारा माल व असबाब लूट लिया जाएगा। अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर बड़ा हैरान व परेशान होकर मजलिस से बाहर आ गया और हुजूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की बारगाहे करम में हाज़िर होकर सफ़र में जाने की इजाज़त चाही। सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फरमाया ऐ अबुल मुज़फ़्फ़र तुम सफ़र करो सहीह सलामत लौट आओगे और मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ। अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर सफ़रे तिजारत पर निकला और अपना सामान एक हज़ार दीनार में फरोख़्त कर दिया और वह एक हम्माम में नहाने की गर्ज से गया और ताक में एक हज़ार दीनार की थैली रख दी और उसे उठाना भूल गया और उस मकान में आ गया जहाँ उस का क़याम था और गहरी नींद में सो गया। आलमे ख़्वाब में क्या देखता है कि वह एक काफ़िले के हमराह सफ़र कर रहा है और रास्ते में अरब के डाकुओं

ने उस काफ़िले पर हमला कर दिया और काफ़िले के हर शख्स को मौत की नींद सुला दिया और एक डाकू ने उस की गर्दन पर तलवार मारी जिस से गर्दन कट कर अलग हो गई। वह इस परेशान कुन ख़्वाब से बेदार हुवा और काँपने लगा और उसे अपनी गर्दन पर खून का असर महसूस हो रहा था और कारी ज़र्ब का दर्द महसूस हो रहा था, उसे अपना रूपया याद आया और हम्माम में दौड़ कर गया, उस का हज़ार दीनार ताक़ में खा हुवा था।

बग़दाद शरीफ़ सफ़र से वापसी पर उस नेफ़ैसला किया कि दोनों बुजुर्गों से मुलाक़ात करूँगा और हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह जो ज़ईफ़ थे उन की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। हज़रत हम्माद दब्बास रहमतुल्लाह अलैह ने देखते ही फ़रमया: शैख़ सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के पास जाओ क्यों कि वह अल्लाह तआला के महबूब हैं और उन्होंने ने तुम को क़त्ल होने और तुम्हारे माल के नुक़सान होने से बचाने के लिये अल्लाह तआला की बारगाह में सत्तर बार दुआ की है जबकि तुम्हारी तक़दीर में क़त्ल और माल का नुक़सान लिखा था लेकिन अल्लाह तआला ने शैख़ अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु की दुआ की बरक़त से तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और सिर्फ़ ख़्वाब में उस का मंज़र दिखा कर क़त्ल और माल के नुक़सान से बचा लिया। फिर अबुल मुज़फ़्फ़र ताजिर सरचश्मए विलायत सरकारे ग़ौसियत। हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की रहमत वाली सरकार में हाज़िर हुवा आप ने फ़रमाया तुम को शैख़ हम्माद रहमतुल्लाह अलैह ने मेरी सत्तर दुआ का वाक़िअह सुना दिया है हमारे आका ग़ौसे आजम ने फ़रमाया खुदा की क़सम मैं ने तुम को क़त्ल से और तुम्हारे माल को नुक़सान से बचाने के लिये अपने अल्लाह तआला की बारगाहे फ़ज़्लो करम में सत्तर बार दुआ की जिस की वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हारी तक़दीर को बदल दिया और बेदारी की चीज़ को ख़्वाब में दिखा दिया। (बहजतुल असरार, शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी, जुबदतुल आसार, सफ़ह ८५)

सवाल: बुरी किस्मत अच्छी हो गई किस तरह बयान कीजिये?

जवाब: हज़रत अबुल ख़िज़र हुसैनी बयान करते हैं कि हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के खादिम को रात में कई मर्तबा एहतलाम हुवा और उसे हर मर्तबा नई सूरत नज़र आई जिन में से बाज़ से तो वह वाकिफ़ था और बाज़ औरतों को वह नहीं जानता था। जब सुबह हुई तो वह हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु की बारगाह में हाज़िर होकर अपनी ख़्वाब की हालत बयान करना चाही तो उस के कुछ कहने से पहले ही सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया: रात में तुम को कई बार एहतलाम हुवा है और मैं ने अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत में लौहे महफूज़ में देखा तो उस में लिखा हुवा था कि तू फुल्लों फुल्लों औरत से ज़िना करेगा। तो मैं ने अल्लाह तआला की बारगाहे बेनियाज़ी में तेरे लिये दुआ की तो अल्लाह तआला ने मेरी दुआ की बरकत से बेदारी के वाकिअह को ख़्वाब में बदल दिया और तेरी बुरी किस्मत को अच्छी बना दी। (क़लाइदुल जवाहर, १३०)

सवाल: गौस पाक के ग्यारह नामे मुबारक की फ़ज़ीलतें बयान कीजिये?

जवाब: पीराने पीर रोशन ज़मीर महबूबे सुबहानी कुतबे रब्बानी ग्यारहवीं वाले पीर हुज़ूर गौसे आजम दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अनहु के ग्यारह नामे मुबारक नमाज़ के बाद और रात को सोते वक़्त और सुबह में पढ़ना ज़्यादा सवाब है और उस के विद से दिल की मुरादे पूरी होंगी और दुश्मन पर फ़तेहयाबी और बलाएँ दूर होंगी और तमाम नेक कामों में कामयाबी हासिल होगी।

(किताब नाफ़िउल ख़लाइक)

सवाल: सरकारे बग़दाद के ग्यारह नामे मुबारक बताइये?

जवाब:	(१)	सय्यद मुहय्युद्दीन	अमरुल्लाह
	(२)	शैख़ मुहय्युद्दीन	फज़लुल्लाह
	(३)	औलिया मुहय्युद्दीन	अमानुल्लाह
	(४)	मिसकीन मुहय्युद्दीन	नूरुल्लाह
	(५)	गौस मुहय्युद्दीन	कुतबुल्लाह
	(६)	सुलतान मुहय्युद्दीन	सैफुल्लाह

(७) ख्वाजा मुहय्युद्दीन	फरमानुल्लाह
(८) मखदूम मुहय्युद्दीन	बुरहानुल्लाह
(९) दुरवेश मुहय्युद्दीन	आयतुल्लाह
(१०) बादशाह मुहय्युद्दीन	गौसुल्लाह
(११) फकीर मुहय्युद्दीन	मुशाहिदुल्लाह

सवाल: सलाते गौसिया के बारे में बताइये?

जवाब: रबीउल आखिर की एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह तारीखों में से किसी भी रात में सालाते गौसिया पढ़ें इनशाअल्लाह तआला हाजतें पूरी होंगी। बाद नमाज़े मगरिब दो रकअत नमाज़े नफ़ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में बाद अल-हम्दु शरीफ़ के ग्यारह बार सूरह इख़लास पढ़ें फिर सलाम के बाद **सुबहानल्लाहि व बिहमदिही सुबहानल्लाहिल अज़ीम व बिहमदिही असतग़फ़िरुल्लाह**, ग्यारह मर्तबा पढ़ें! फिर ग्यारह मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में दरूद व सलाम अर्ज करें और ग्यारह बार यह कहें। **या रसूलल्लाहि, या नबिय्यल्लाहि अग़िसनी वमदुदनी फ़ी क़ज़ाई हाजती या काज़ियल हाजाति** फिर इराक़ की तरफ़ ग्यारह क़दम चलें हर क़दम पर यह कहे। **या ग़ौसस्सक़लैन या करीमतर्फ़ैन वमदुदनी फ़ी क़ज़ाई हाजती या काज़ियल हाजाति**। फिर हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सय्यदेना ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु के वसीलए मुबारक से अल्लाह पाक से दुआ माँगे। (अनवारुल बयान, जिल्द अब्वल, सफ़ह ५७३)

सवाल: नबी का क़दम ग़ौसे आजम के काँधे पर किस तरह?

जवाब: आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने लिखा है। जिस की तलख़ीस पेश है कि बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु के बारे में बअज़ किताबों में लिखा है कि महबूबे ख़ुदा मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेराज के लिये जब तशरीफ़ ले जा रहे थे तो बुराक़ पर सवार होते वक़्त हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की रूहे मुबारक हाज़िर हुई और आप ने काँधा शरीफ़ को आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश किया कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उस पर कदम रख कर बुराक पर सवार हों। तो उस मौका पर आकाए करीम, मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने शहजादे शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु को नवाज़ा कि आप के काँधे पर अपने पाए मुबारक को रखा और बुराक पर सवार हुये। और फरमाया कि मेरा पाँव तेरी गर्दन पर है और तेरा पाँव सारे वलियों की गर्दन पर होगा। यह वाकिअह मक्का मुअज़्ज़मा की सरज़मीन पर हुवा। (फ़तावा रज़विया, जिल्द १२, सफ़ह २०)

सवाल: गौसे आजम ने बारह बरस की डूबी कश्ती निकाली मुख़तसर बयान कीजिये?

जवाब: महबूबे सुबहानी, शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के बारे में एक करामत बहुत ही मशहूर है और महफिलों में उलमाए केराम बयान भी करते हैं कि एक बूढ़ी औरत लंबे दरया बैठी रो रही थी इत्तिफ़ाक़न हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु का उस तरफ़ गुज़र हुवा। हज़रत ने दरयाफ़्त फरमाया कि क्यों रो रही हो? बूढ़ी औरत ने अर्ज़ की हज़रत! बारह बरस हो गये हैं इस दरया में मेरी बेटे की बारात मआ सामान डूब गई और मेरा लड़का भी डूब गया उसी के ग़म में यहाँ आकर मैं रोज़ाना रोती हूँ। आप ने दुआ की तो अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फरमाई और बारह बरस की डूबी कश्ती बारात और साज़ो सामान के साथ सहीह सालिम निकल आई और बूढ़ी औरत खुश होकर अपने मकान को चली गई। (फ़तावा रज़विया शरीफ़, जिल्द १२, सफ़ह १६८)

सवाल: तमाम कादरियों को बख़शिश की बशारत के बारे में बताइये?

जवाब: हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि मुझे एक काग़ज़ दिया गया जो इतना बड़ा था कि जहाँ तक निगाह पहुंचे, उस काग़ज़ में मेरे असहाब और मुरीदीन के नाम लिखे थे जो क़यामत तक होने वाले थे और मुझ से कहा गया कि तुम्हारे इन सब मुरीदों को तुम्हारी वजह से बख़्श दिया गया और मैं ने दोज़ख़ के दारोगा से पूछा कि क्या तुम्हारे पास मेरा कोई मुरीद है? तो दारोगा ने कहा कि आप का एक मुरीद भी दोज़ख़ में नहीं है। (बहजतुल असरार, सफ़ह २६४)

सवाल: सरकार गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु का हाथ मुरीदों के सर पर कैसे?

जवाब: हुज़ूर गौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु फरमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआला की इज़्ज़त व जलाल की कसम है कि **“इन्ना यदी अला मुरीदी कस्समाइ अलल अर्ज़ि”** मेरा हाथ मेरे मुरीद पर इस तरह है जिस तरह आसमान का साया ज़मीन पर। अगर मेरा मुरीद उमदह नहीं तो मैं तो उमदह हूँ, मुझे अपने रब तआला के इज़्ज़त व जलाल की कसम कि मेरे कदम मेरे रब तआला के सामने बराबर रहेंगे यहाँ तक कि मुझ को और तुम को जन्नत की तरफ़ ले जाएगा। (बहजतुल असरार, सफ़ह २६४)

सवाल: मुरीदे सादिक की दुआ ने चोर को मुर्शिदे कामिल बना दिया कैसे?

जवाब: आशिके इमाम अहमद रज़ा, अलमबरदारे, मसलके आला हज़रत, रईसुल कलम हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी अलैहिर्रहमह की ज़बानी मुलाहिज़ा कीजिये।

इराक़ का मशहूर डाकू अब्दुल्लाह गुनाहों से ताइब हो चुका था और अल्लाह तआला की बारगाह में कुर्ब का मक़ाम पाने के लिये पीर व मुर्शिद का होना लाज़िमी है, इसी मक़सद से सरफ़राज़ी और कामयाबी के लिये अब्दुल्लाह भी पीर व मुर्शिद की तलाश में था मगर नेक व सच्चे लोग आसानी के साथ नहीं मिला करते, मगर जिस पर खुदाए तआला का फ़ज़्लो करम हो जाये। आज पूरी रात अब्दुल्लाह ने रो-रो कर गुज़ारी थी कि इलाही! मुझे मेरे पीर व मुर्शिद से मिला दे। आख़िर सुबह होने वाली थी और अब्दुल्लाह ने भी फैसला कर ही लिया था कि आज मुरीद हो जाना है और सुबह जो सब से पहले मिलेगा उसी को पीर व मुर्शिद बना लूँगा। अब्दुल्लाह रात भर जागा था, ख़ूब दुआएँ माँगी थीं, अब्दुल्लाह नमाज़े फ़ज़्र के लिये घर से निकला। एक चोर जिस का नाम यहया था, चोरी कर के रात के अंधेरे में भागा जा रहा था कि अब्दुल्लाह ने दौड़ कर यहया चोर को पकड़ लिया और बड़ी मन्नत व समाजत के साथ अर्ज़ करने लगा कि अल्लाह तआला ने मेरी रात भर की दुआ को कुबूल फरमा लिया है और आप को मेरा पीर व मुर्शिद बना कर भेज दिया है इस लिये

जब तक आप मुरीद नहीं करते मैं आप को हर्गिज नहीं छोड़ूंगा। और यहया हैरान व परेशान है कि मैं पीर व मुर्शिद कहाँ हूँ मैं तो एक चोर हूँ और आज पकड़ा गया। यहया चोर ने कहा कि मैं पीर व मुर्शिद नहीं हूँ तुम मुझ को छोड़ दो। मगर अब्दुल्लाह अपनी जिद पर हैं कि तुम जब तक मुझ को मुरीद नहीं कर लेते हो मैं आप को छोड़ूंगा नहीं। बादेले नाख्वास्ता ना चाहते हुये भी और जलदी से रात के अंधेरे में घर पहुंचने की गर्ज से ताकि लोग देख न लें, मजबूरन यहया चोर ने अब्दुल्लाह का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा कि मैं ने तुम को मुरीद किया और मैं जब तक वापस न आऊँ तुम इसी मकाम पर खड़े रहना। यहया तो चोर था, जान छुड़ा कर झूट मूट मुरीद कर के अपनी राह लिया। लेकिन अब्दुल्लाह वह अभी कुछ दिनों पहले ही डाकाजनी से तौबा किया था उस की तलब तो सच्ची थी, वह तो यही समझ रहा है कि रात की मेरी दुआ कुबूल हुई और अब्दुल्लाह तआला ने मुझ को पीर व मुर्शिद अता फरमा दिया है।

अब अब्दुल्लाह उसी मकाम पर खड़ा है जहाँ यहया चोर ने मुरीद कर के कहा था कि जब तक मैं वापस न आऊँ तुम इसी जगह खड़े रहना। पीर व मुर्शिद के इन्तिज़ार में महीना गुज़रा मगर पीर व मुर्शिद नहीं आये, साल गुज़रा मगर पीर व मुर्शिद का पता नहीं तक़रीबन तीन साल का अर्सा गुज़र गया मगर पीर व मुर्शिद का कोई सुराग़ नहीं चला। हकीकत तो यह थी कि वह पीर व मुर्शिद नहीं बल्कि चोर था मगर एक सच्चे और पक्के मुरीद की दुआ किस तरह असर दिखाती है कि झूट मूट में मुरीद कर के जान बचा कर भाग जाने वाला यहया चोर तीन साल के बाद चोरी करने के लिये बग़दादे मुअल्ला में महबूबे सुबहानी, कुत्बे रब्बानी, पीराने पीर दस्तगीर शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के मकान में दाख़िल हुवा, तलाशे बिसयार के बाद जब कुछ हाथ न आया तो कहने लगा कि बड़ा नाम है मगर इस घर से कुछ न मिला। उस को क्या पता था कि अब वह निमत मिलने वाली है जो हज़ार कोशिशों के बाद भी नहीं मिला करती। घर से निकल कर भागना चाहा तो आँख अंधी हो गई, अब दर्वाज़ा ही नहीं मिलता घर से निकले कैसे, मजबूरन घर के

एक गोशे में बैठ गया। उधर हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि फुलॉ शहर के कुतुब का इन्तिकाल हो गया है, वहाँ के लिये कुतुब चाहिये। महबूबे सुबहानी हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया! सुबह कुतुब का इन्तिज़ाम हो जाएगा। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। सुबह होने से पहले अगर कोई बला नाज़िल हो गई तो उस का ज़िम्मेदार कौन होगा। महबूबे सुबहानी, हमारे बड़े पीर, हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया कि मेरे घर में एक मेहमान आया है, उस चोर को बुलाओ उसी को कुतुब बना कर भेज देता हूँ। ख़ादिम उसी यहया चोर को लेकर बारगाहे कादरियत व ग़ौसियत में हाज़िर हुये, हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने कौंची से उस के बाल को तराशा और अल्लाह तआला की अता की हुई ताक़त व कुव्वत से मसनदे विलायत व कुतबियत पर बैठा दिया और उस का हाथ हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के हाथ में दे दिया और फ़रमाया कि उस जगह पर जा कर अब्दुल्लाह को मुरीद करो और फिर अपने मक़ाम पर जाओ। हज़रत एक सच्चे मुरीद की दुआ ने यहया चोर को वली व कुतुब और मुशिदि कामिल बना दिया। (सवानेह ग़ौस व ख़्वाजा, सफ़ह १७)

सवाल: चोर वली कैसे हो गया?

जवाब: हमारे पीर, हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु की चादर मुबारक बड़ी कीमती थी, उस में बेशबहा हीरे, जवाहरात लगे हुये थे। एक चोर काफी दिनों से इसी ताक में था कि मौका मिले और चादर को चुराऊँ। एक दिन महबूबे सुबहानी, हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अनहु जंगल की तरफ़ चले वह चोर भी पीछे पीछे चला जब हुज़ूर ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु अनहु एक झाड़ी की आड़ में पहुंचे तो चोर ने मौका को ग़नीमत जानते हुये पीछे से कीमती चादर को पकड़ा और लेकर भागने वाला ही था कि हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने आसमान की जानिब मुंह कर के दुआ की या अल्लाह तआला! तू ख़ूब जानता है कि यह चोर है, मगर इस ने मेरे दामन को पकड़ा है, अब अगर चोर ही रहा तो कहा जाएगा कि महबूबे सुबहानी अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का

दामन पकड़ने वाला भी चोर होता है। ग़ैबी निदा आई। तुम्हारे दामन की बरकत से इस चोर को नेक व पारसा ही नहीं बल्कि वलीए कामिल बना दिया। (अनवारुल बयान, सफ़ह ६०२)

सवाल: कादरी निसबत से धोबी कैसे बख़्श गया?

जवाब: शहज़ादए रसूल, हसनी, हुसैनी फूल हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अनहु का एक धोबी था जो आप के कपड़े धोया करता था। उस का इन्तिकाल हो गया तो कब्र में मुनकर नकीर सवालात किये तो उस धोबी ने जवाब दिया कि मैं महबूबे सुबहानी, हुज़ूर ग़ौसे पाक जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का धोबी हूँ, फरिश्तों ने रब तआला की बारगाह में अर्ज की। या अल्लाह तआला हमारे सवालात पर कहता है कि मैं महबूबे सुबहानी शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अनहु का धोबी हूँ। तो रब तआला ने फ़रमाया जब मेरे महबूब अब्दुल कादिर जीलानी का नाम लेता है तो मैं ने उस नाम व निसबत के तुफ़ैल से उस को बख़्श दिया। (अल-इज़ाफ़ातिल यौमियह, जिल्द २, सफ़ह २६)

सवाल: एक शराबी पर एक नेक की सोहबत व निसबत के असर के मुतअल्लिक बताइये?

जवाब: बुजुर्गों ने बयान फ़रमाया है कि अल्लाह के वली हज़रत सिरी सकती रज़ियल्लाहु तआला अनहु अपने असहाब व मुरीदीन के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे कि एक शराबी को देखा कि लंबे सड़क सरे राह नशे में धुत पड़ा हुवा है मगर उस की ज़बान पर अल्लाह की सदा जारी है। अल्लाह के दोस्त, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नायब हज़रत सिरी सकती रज़ियल्लाहु तआला अनहु रुक गये और इरशाद फ़रमाया एक गिलास पानी लाया जाये। पानी का गिलास हाज़िरे ख़िदमत किया गया, आप ने अपने दस्ते मुबारक से उस शराबी के मुंह को पानी से धुल दिया। पाक व साफ़ कर के फ़रमाया कि अब पाक मुंह से अल्लाह तआला का पाक नाम लेगा और तशरीफ़ ले गये। जब रात को सोये तो ख़्वाब में बशारत दी गई कि ऐ मेरे नेक सिरी व सकती तूने मेरी ख़ातिर मेरे शराबी बन्दे के मुंह को पाक व साफ़ किया और अब उस के मुंह पर तेरा हाथ लग गया है

और मुखतसर सोहबत तेरी उस बन्दे को नसीब हो गई है तो तेरी सोहबत और निसबत की बरकत से मैं ने उस के दिल को धुल कर पाक व साफ़ कर दिया है। हज़रत सिरी सकती रज़ियल्लाहु तआला अनहु ख़्वाब से बेदार हुये, नमाज़े तहज्जुद के लिये मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो क्या देखा कि कल जो शख्स शराब के नशे में धुत होकर पड़ा हुआ था मस्जिद में तहज्जुद की नमाज़ अदा कर रहा है। हज़रत सिरी सकती रज़ियल्लाहु तआला अनहु हैरत व इसतेजाब में उस शख्स को देखने लगे तो वह शख्स हज़रत सकती रज़ियल्लाहु तआला अनहु से कहता है कि हज़रत आप हैरान व परेशान क्यों हैं, अल्लाह तआला ने आप को सब कुछ तो बता दिया है। (खैरुल मजालिस)

सवाल: पीर व मुर्शिद ने मुरीद को शैतान के शर से बचा लिया कैसे?

जवाब: आशिके रसूल, इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अनहु फ़रमाते हैं कि जब इन्सान की नज़अ का वक़्त करीब आता है तो शैतान जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी तरह मरने वाले का ईमान सल्ब हो जाये, क्यों कि उस वक़्त ईमान से फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा। चुनाँचे हज़रत इमाम फ़ख़्ख़दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु के इन्तिक़ाल का वक़्त करीब आया तो उस वक़्त शैतान आ गया और कहने लगा ऐ इमाम राज़ी तुम ने उम्र भर मुनाज़िरे किये, क्या तूने खुदा को पहचाना? इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने फ़रमाया बेशक खुदा एक है। इबलीस ने कहा कि खुदा एक है तो उस पर क्या दलील? हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दलील पेश की तो शैतान जो मुअल्लिमुल मलकूत रह चुका था, उस ने वह दलील रद कर दी। हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने दूसरी दलील कायम की तो इबलीस लईन ने वह भी काट दी। यहाँ तक कि हज़रत इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु ने ३६० दलीलें कायम कीं और इबलीस ने सारी दलीलों को काट दिया। अब इमाम राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अनहु सख़्त परेशान व हैरान व निहायत मायूस थे कि अब कैसे उस शैतान मरदूद से बचा जाये। कि आप के पीर व मुर्शिद ने (अपने मुरीद की परेशानी और बेचारगी और शैतान की

शरारत को देख कर) आवाज़ दी कि क्यों नहीं कह देता कि मैं खुदाए तआला को बेदलील एक मानता हूँ। (अल-मलफूज़ शरीफ, सफ़ह ५३)

सवाल: हुज़ूर के ज़मानए अक़दस के दो वलीए जलील हज़रत सय्यद अबुस्सऊद बिन अहमद बिन अबी बक्र हरीमी व हज़रत सय्यदी अबू अमर उसमान अल-सरीफीनी कुदिसल्लाहु सिरुहुमा क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: वल्लाहु मा अज़हरल्लाहु तआला वला यज़हरु इलल वजूदि मिसलुशशैख मुहियुद्दीन अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु।

तर्जमह: खुदा की कसम अल्लाह तआला ने कोई वली ज़ाहिर किया न ज़ाहिर करे मिस्ल शैख अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहु तआला अनहु के। (फ़तावा रज़विया, जिल्द २८, सफ़ह ६४)

सवाल: हज़रत सय्यदेना ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम क्या फ़रमाते हैं?

जवाब: तर्जमह: अल्लाह सुबहानहू व तआला ने जिस वली को किसी मक़ाम तक पहुंचाया शैख अब्दुल कादिर उस से आला रहे और जिस मुकर्रब को कोई हाल अता किया शैख अब्दुल कादिर उस से बाला रहे, अल्लाह के जितने औलिया हुये और जितने होंगे क़यामत तक सब शैख अब्दुल कादिर का अदब करते हैं। (फ़तावा रज़विया, जिल्द २८, सफ़ह ६५)

सवाल: यह बयान किया जाता है कि सरकार गौसे पाक रज़ियल्लाहु अनहु ने हज़रत शैख सय्यद रेफ़ाई के हाथ पर बैअत की है, कहाँ तक दुरुस्त है?

जवाब: यह बात बिल्कुल ग़लत है। (फ़तावा रज़विया, जिल्द २८, सफ़ह ६७)

सिराजुल कादिरी बहराइची

बानी व नाज़िमे आला साबिरी यतीन ख़ाना

जामिया सरकार आला हज़रत, गंगवल बाज़ाद, बहराइच

८ शव्वालुल मुकर्रम १४३६ हिजरी मुताबिक २५ जुलाई २०१५ ई.

गाज़ी किताब घर की किताबें

इस्लामी हीरे कुइज़ यानी
 सुत्री कुइज़
 गुस्ताख कलम
 अनवारे कुरआनी
 मुजरिम अदालत में
 शबे बराअत
 तोहफ़ए रमज़ान
 बर्के रिज़वियत, बर फ़िल्नए
 वहाबियत
 बर्के वहदत बर फ़िल्नए नज्दियत
 अंधे नज्दी देख ले
 मुनाफ़िक्कीन
 बहिश्ती ज़ेवर पर रिज़वी
 ऐटम बम
 उलमाए देवबंद की कहानी
 तोहफ़ए निकाह
 दश्ते कर्बला
 शहीदाने कर्बला
 अस्ली दस बीबियों की कहानी
 अस्ली सय्यदा बीबी की कहानी
 माँ का आंचल
 कब्र से जन्नत तक
 लुआबे दहने मुस्तफ़ा
 अस्हाबे कहफ़
 मक़ामे आला हज़रत
 तारीख़ी कहानियाँ
 फ़ज़ाइले मज़्मूअए नमाज़
 फ़ातिहा इमाम जाफ़र सादिक़

फ़ातिहा का सहीह तरीका
 चहल हदीस
 नूरे यज़दां (बेकल तसाही
 बलरामपूरी)
 इरफ़ाने मुस्तफ़ा (पॉकिट)
 नग़माते मुस्तफ़ा (पॉकिट)
 अनवारे मुस्तफ़ा (पॉकिट)
 जल्वए मुस्तफ़ा (पॉकिट)
 मन्क़बतें (पॉकिट)
 क़ादरी रिज़वी मज़्मूअए सलाम
 गाज़ी कायदा
 गाज़ी कायदा मुकम्मल
 आप का मदर्स अव्वल
 आप का मदर्स दोम
 आप का मदर्स सोम
 बहारे रहमत कायदा
 बहारे रहमत अव्वल
 बहारे रहमत दोम
 बहारे रहमत सोम
 सुत्री कुइज़ हमारे आका
 सुत्री कुइज़ अंबियाए
 किराम अव्वल
 सुत्री कुइज़ अंबियाए
 किराम दोम
 सुत्री कुइज़ अंबियाए
 किराम सोम
 सुत्री कुइज़ अज़वाजे
 तय्यिबात

सुत्री कुइज़ फ़र्ज़न्दाने मुकर्रम
 सुत्री कुइज़ खुलफ़ाए
 राशिदीन
 सुत्री कुइज़ सहाबए
 किराम
 सुत्री कुइज़ सहाबियात
 सुत्री कुइज़ मालूमाते आम्या
 सुत्री कुइज़ दास्ताने जुल्म
 व बरबरियत
 सुत्री कुइज़ मेरे आला हज़रत
 सुत्री कुइज़ नमाज़
 सुत्री कुइज़ कुरआने मजीद
 सुत्री कुइज़ औलियाए किराम
 सुत्री कुइज़ मेरे ख़्वाजा
 हिन्द के राजा
 सुत्री कुइज़ सरकार ग़ौसे
 आज़म
 सुत्री कुइज़ अक़यद व मसाइल
 वहाबी मुल्लाओं की शाख़ियाँ
 मस्अलए तकफ़ीर और
 इमाम अहमद रज़ा
 (शारेह बख़ारी मफ़्तु महम्मदु
 शरीफ़ुल हक़ अमजदी)
 आईनए कियामत
 (अल्लामा हसन रज़ा ख़ां
 बरेलवी)
 सुत्री कुइज़ अइम्मए अरबआ

Ghazi Kitab Ghar

Gangwal Bazar, Distt. bahraech Shareef (U.P.)